यूक्रेनी लोक कथा

लोमड़ी और भेड़िया

चित्र: वी. कावुन, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

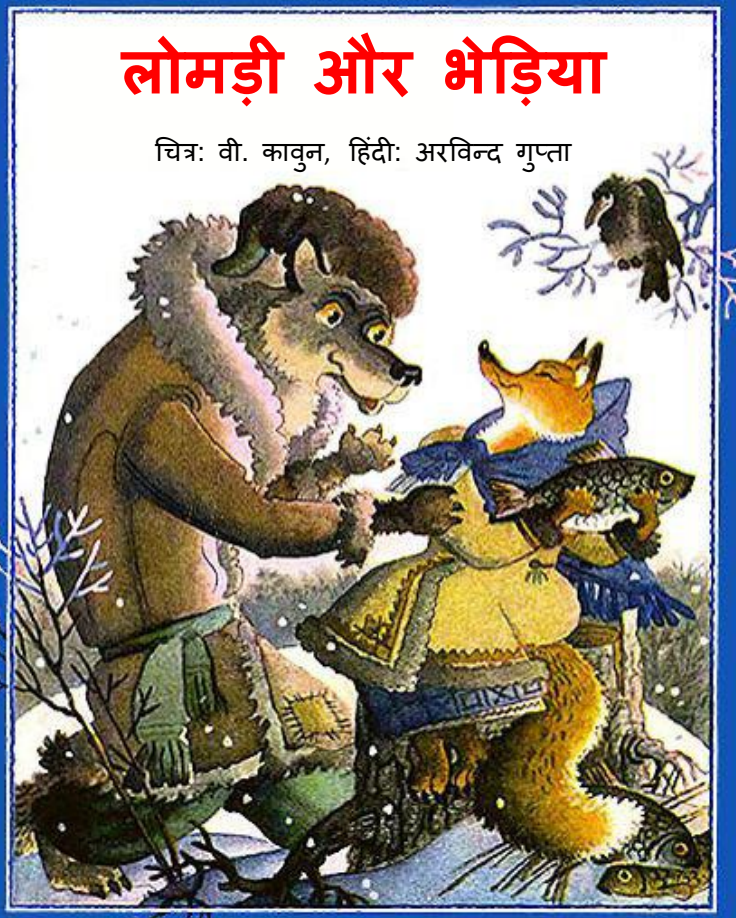

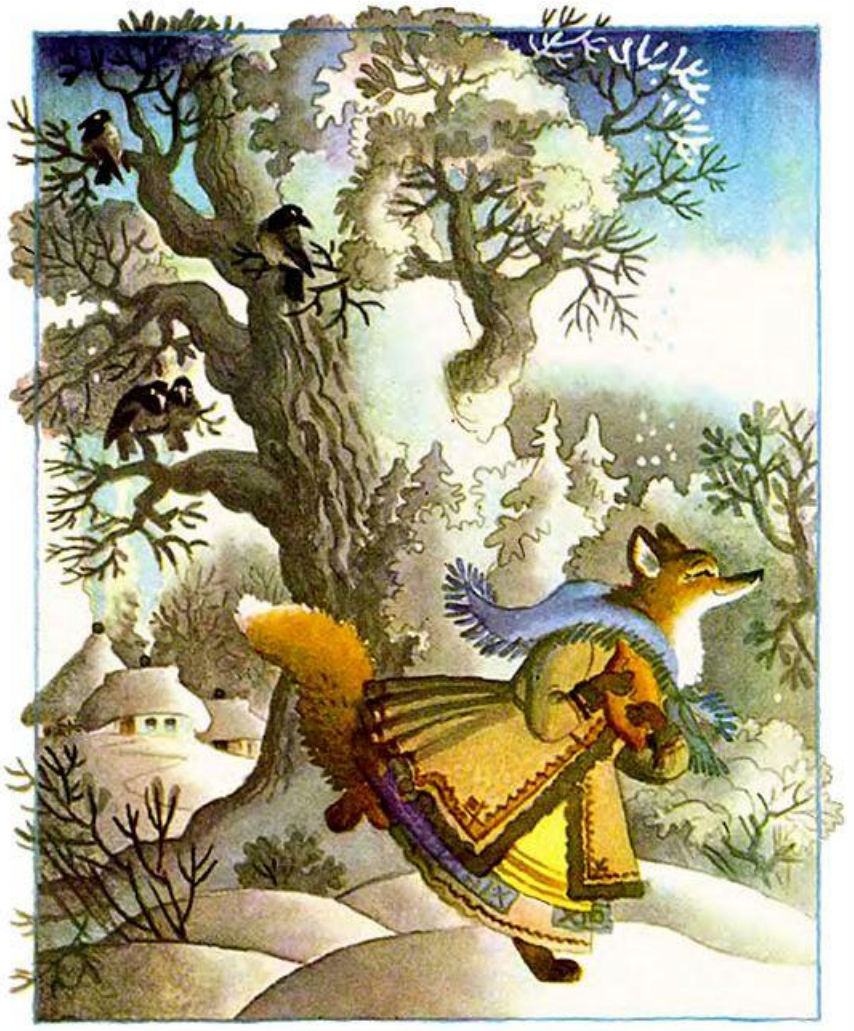

एक बार की बात है, एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे. एक रविवार को बूढ़ी औरत ने खसखस के रोल बनाए. जब वे पक गए, तो उसने उन्हें ओवन से बाहर निकाला और ठंडा होने के लिए खिड़की पर एक कटोरे में रख दिए. तभी एक लोमड़ी घर के पास दौड़ती हुई आई और सूँघने लगी - कितने प्यारे रोल हैं! वह चुपचाप खिड़की के पास आई, उसने एक रोल छीना और भाग गई. फिर वह भागकर एक खेत में गई. वहां उसने रोल में से सारे खसखस के बीज निकाल दिए, फिर उसमें भूसा भर दिया, रोल के दोनों हिस्सों को एक साथ दबाया और जल्दी से वहां से चली गई.

रास्ते में उसे कुछ चरवाहे मवेशी हांकते हुए मिले.

"हलो, लड़कों!"

"हलो, फॉक्सी-लोक्सी!"

"मुझे खसखस रोल के बदले एक बछड़ा दे दो!"

"क्या, खसखस रोल के लिए एक बैल का बछड़ा? यह कोई सही सौदा नहीं है!"

"ओह, लेकिन यह रोल बहुत प्यारा है, तुम्हें वो बहुत पसंद आएगा!"

वह चिल्लाती रही और तब तक मनाती रही जब तक कि एक लड़के ने जाकर उसे बछड़ा नहीं दे दिया.

"अब सुनो, लड़कों," उसने कहा, "देखो, मेरे जंगल में पहुँचने से पहले तुम रोल खाना शुरू मत करना!"

फिर लोमड़ी बछड़े को आगे बढ़ाते हुए भाग गई. लड़कों ने उसके जंगल में गायब होने तक इंतजार किया, फिर रोल खाना शुरू कर दिया. लेकिन ओह! उसके अंदर तो भूसा भरा था...

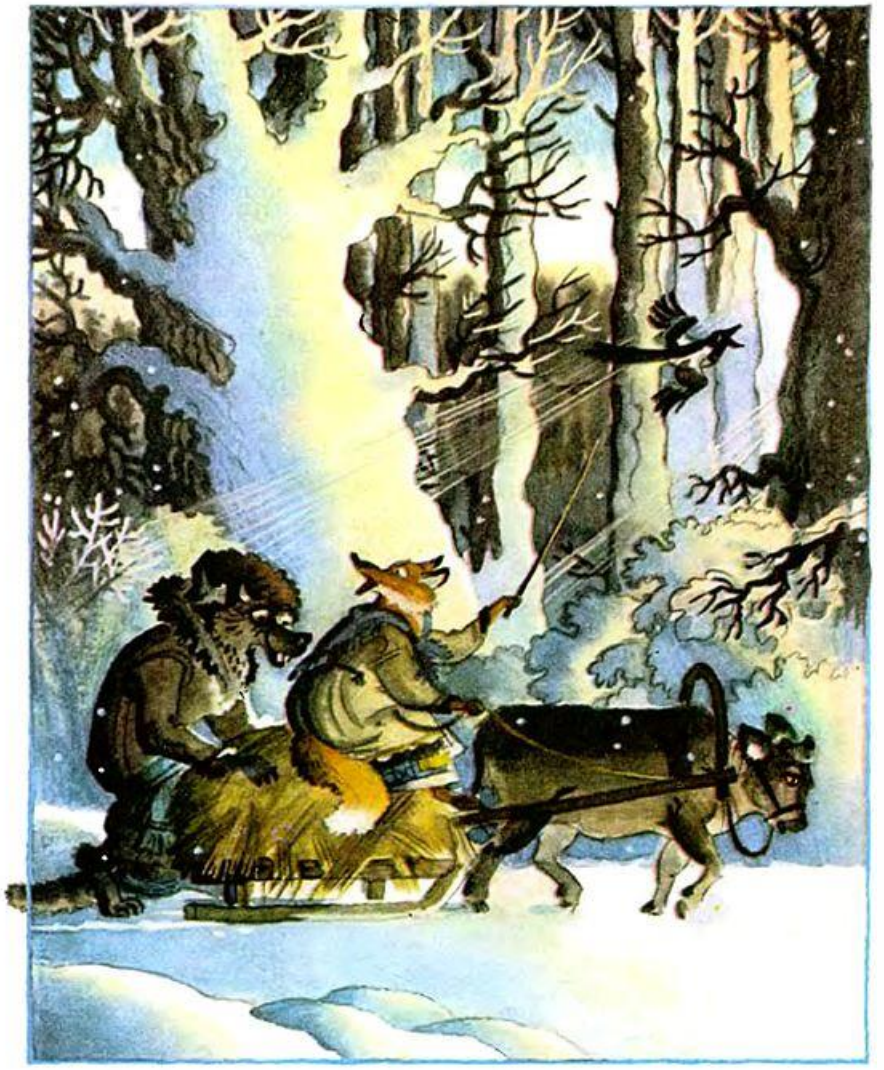

इस बीच लोमड़ी, बछड़े को जंगल में ले गयी और उसने उसे एक ओक के पेड़ से बांध दिया, और खुद के लिए स्लेज बनाने के लिए कुछ पेड़ काटने चली गई. वह अपना काम करती रही, पूरे समय दोहराती रही:

"गिर जाओ, पेड़ - टेढ़े और सीधे! नीचे गिरो, पेड़ - टेढ़े और सीधे!"

फिर लोमड़ी ने अपने लिए एक स्लेज बनाई, उसमें बछड़े को बैठाया और वो चल दी. तभी भेड़िया उसकी ओर भागता हुआ आया.

"हलो, फॉक्सी-लोक्सी!"

"हलो, पाल्सी-वोल्फ़ी!"

"तुम्हें यह बछड़ा और स्लेज कहाँ से मिले?"

"ओह, मैंने बछड़ा अर्जित किया और मैंने स्लेज खुद बनाई!"

"ठीक है, फिर मुझे लिफ्ट दे दो!"

"वो मैं कैसे कर सकती हूँ? क्योंकि, तुम मेरी स्लेज तोड़ दोगे!"

"नहीं, मैं वैसा नहीं करूँगा. मैं उस पर केवल एक पंजा रखूँगा."

"ठीक है, चलो.“

फिर भेड़िये ने अपना एक पंजा स्लेज पर रखा और वे आगे बढ़े.

थोड़ी देर बाद भेड़िये ने कहा:

"क्या तुम्हें पता है, फॉक्सी-लोक्सी, मैं स्लेज पर एक और पंजा रखूंगा."

"लेकिन, पाल्सी-वोल्फ़ी, तुम मेरी स्लेज को तोड़ दोगे!"

"नहीं, मैं वो नहीं करूँगा!"

"ठीक है, चलो!"

भेड़िये ने स्लेज पर अपना दूसरा पंजा रखा और वे आगे-आगे चलने लगे, तभी अचानक - चरमराहट!

"ओह!" लोमड़ी चिल्लाई. "मेरी स्लेज टूट रही है!"

"अरे नहीं, फॉक्सी-लोक्सी, वो केवल मेरी हड्डियाँ चरमरा रही थीं."

वे अपने रास्ते पर चलते रहे, और भेड़िये ने कुछ देर बाद फिर कहा:

"तुम्हें पता है क्या, फॉक्सी-लोक्सी, अब मैं अपना तीसरा पंजा स्लेज पर रखूंगा."

"लेकिन तुम उसे कहां रखोगे! उससे तुम मेरी स्लेज तुम पूरी तरह से तोड़ दोगे!"

"अरे नहीं, मैं स्लेज क्यों तोड़ूंगा?"

"ठीक है!"

जैसे ही उसने तीसरा पंजा स्लेज पर रखा, तभी - चरमराहट! की आवाज़ हुई.

"अरे, वोल्फ़ी, स्लेज चरमरा रही है. उतर जाओ नहीं तो तुम उसे तोड़ दोगे!"

"क्या तुम कल्पना कर रही हो, फॉक्सी-लोक्सी? वह एक अखरोट था जिसे मैंने अभी तोड़ा था."

"क्या? फिर मुझे भी एक अखरोट दे दो!"

"वो मेरे पास आखिरी अखरोट था."

कुछ देर बाद भेड़िये ने कहा: "तुम्हें पता है, फॉक्सी-लोक्सी, अब मैं स्लेज पर बैठूंगा!"

"तुम कैसे बैठोगे? देखो, स्लेज में जगह ही नहीं है!"

"तुम चिंता मत करो, मैं किसी तरह दुबक कर बैठ जाऊँगा!"

"तुम मेरी स्लेज को पूरी तरह से तोड़ दोगे! फिर मैं अपनी जलाऊ लकड़ी घर में कैसे लाऊंगी?"

"अब, अब, मैं उसे क्यों तोड़ूंगा? मैं उतना भारी नहीं हूं. मुझे बस बैठ जाने दो, फॉक्सी-लोक्सी, क्योंकि मैं बहुत थक गया हूं. मैं वास्तव में बहुत सावधान रहूंगा."

"ठीक है, चलो. मुझे लगता है कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है."

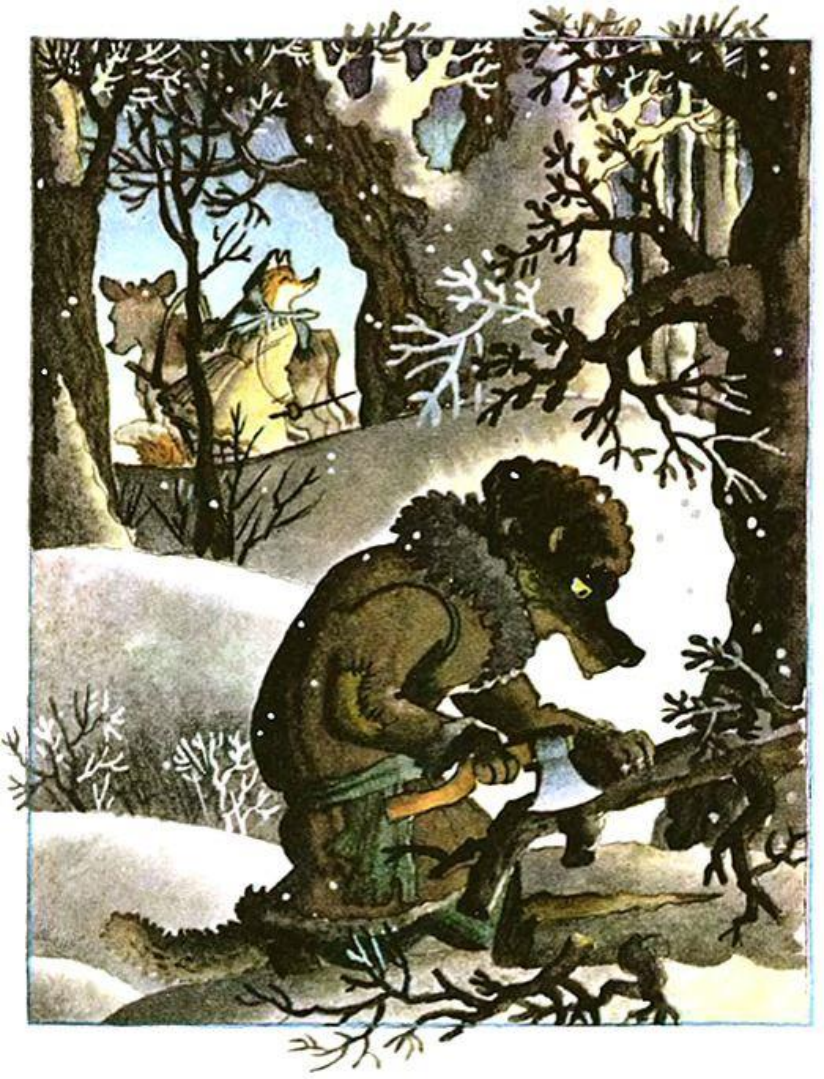

भेड़िया स्लेज पर चढ़ गया, और जैसे ही उसने ऐसा किया, तभी - स्लेज के टुकड़े-टुकड़े हो गए.

लोमड़ी ने क्या हंगामा मचाया!

"ओह, तुम नीच धोखेबाज़, तुम आवारा भेड़िये! देखो तुमने यह क्या किया!"

लोमड़ी बहुत गुस्सा हुई और वो बड़बड़ाने लगी, और अंत में बोली:

"अब जाओ और स्लेज के लिए कुछ पेड़ काट कर लाओ."

"लेकिन फॉक्सी-लोक्सी, मैं नहीं जानता कि तुम्हें किस तरह के पेड़ चाहिए और उन्हें कैसे काटा जाता है?"

"ओह, दुष्ट मूर्ख! तो तुम स्लेज को तोड़ना तो जानते हो, लेकिन पेड़ को गिराना नहीं जानते, क्या ऐसा है? तुम्हें बस इतना ही कहना है कि 'गिर जाओ, पेड़ों - टेढ़े और सीधे! गिर जाओ! नीचे गिरो, पेड़ - टेढ़े और सीधे! नीचे गिरो, पेड़ - टेढ़े और सीधे!' समझे?"

फिर भेड़िया जंगल में चला गया और काम पर लग गया, और लगातार दोहराता रहा:

"गिर जाओ, पेड़ - टेढ़े और टेढ़े! नीचे गिरो, पेड़ - टेढ़े और टेढ़े!"

कई पेड़ों को काटने के बाद, वो उन्हें कैसे-कैसे करके लोमड़ी के पास खींचकर लाया. लोमड़ी ने उन पर एक नज़र डाली, लेकिन वे पेड़ इतने मुड़े हुए और टेढ़े-मेढ़े थे कि उनसे एक मोल्डबोर्ड भी नहीं बन सकता था, स्लेज की तो बात ही छोड़ दीजिये! लोमड़ी फिर से भेड़िये पर क्रोधित हुई:

"तुमने पेड़ों को उन्हें कैसे काटा?" वह चिल्लाई.

"वे बस इसी तरह गिरे!"

"लेकिन तुमने वे शब्द क्यों नहीं बोले जो मैंने तुमसे कहे थे?"

"मैंने किया. मैंने कहा 'गिर जाओ, पेड़ों - टेढ़े और टेढ़े!"

"तुम कितने मूर्ख हो और किसी काम के लायक नहीं हो. यहीं रुको और उस बछड़े की देखभाल करो, जब तक मैं जाकर खुद पेड़ काटकर लाती हूँ!"

जैसे ही भेड़िया वहाँ बैठा, उसे बहुत भूख लगी. उसने स्लेज में काफी खोजबीन की, लेकिन उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिला. वह सोच रहा था कि वह अपनी भूख कैसे मिटाए और उस बछड़े को खाने से बेहतर उसे और कुछ नहीं सूझा. इसलिए वह उस पर टूट पड़ा, और उसके बाजू में एक छेद कर दिया, और हड्डियों और खाल को छोड़कर सारा मांस खा लिया. उसने खाल के खोल में गौरैयों के झुंड को घुसा दिया. फिर उसने छेद को पुआल से बंद कर दिया, बछड़े को एक बाड़ के सहारे टिका दिया और उसे एक छड़ी से सहारा दिया, और खुद छिप गया. जब लोमड़ी वापस लौटी, तो उसने बछड़े के बगल से भूसे का एक टुकड़ा निकला हुआ देखा. उसने छड़ी बाहर निकाली और उसी क्षण - फुर्र! - गौरैयों का झुंड बिल से बाहर उड़ गया. जब उसने छड़ी पकड़ी तो तुरंत बछड़ा नीचे गिर गया.

"बस तुम रुको, तुम नीच धोखेबाज़!" लोमड़ी भड़क उठी. "मैं अभी तुम्हें मज़ा चखाऊंगी!"

और फिर लोमड़ी पागल की तरह भागी.

सड़क पर दौड़ते हुए, वह मछलियों से भरी हुई गाड़ियों के एक कारवां के पास आई. लोमड़ी बीच सड़क पर लेट गई और ऐसा नाटक करने लगी जैसे वह मर गई हो.

"अरे, लड़कों, देखो क्या अद्भुत लोमड़ी है!" गाड़ीवानों में से एक चिल्लाया.

वे उसके चारों ओर भीड़ लगा रहे थे, उसे इधर-उधर घुमा रहे थे. अंत में उन्होंने उसे अपने साथ ले जाने का फैसला किया, क्योंकि उसके फर से बच्चों के लिए अद्‌भुत टोपियाँ बनाई जा सकती थीं. आखिर में उन्होंने उसे वैगन में फेंक दिया और आगे बढ़ गए.

यह देखते हुए कि कोई उस पर ध्यान नहीं दे रहा है, लोमड़ी ने गाड़ी से मछलियाँ नीचे फेंकना शुरू कर दीं. जब उसने काफी मछलियाँ सड़क पर फेंक दी, फिर वह चुपचाप वैगन से कूद गई और खिसक ली. गाड़ीवाले आगे बढ़ गए, जबकि लोमड़ी ने सड़क पर पड़ी सारी मछलियाँ उठा लीं.

जैसे ही वह एक अच्छी दावत करने के इरादे से बैठी और खुद को सहज किया, तभी पाल्सी-वोल्फ़ी दौड़कर आ गई.

"हलो, फॉक्सी-लोक्सी!"

"हलो!"

"आप क्या कर रही हैं, फॉक्सी-लोक्सी?"

"बेशक मैं मछली खा रही हूँ."

"क्या तुम मुझे कुछ नहीं दोगी?"

"मैंने बड़ी मुश्किल से उन्हें पकड़ा है, और तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मछली ऐसे ही दे दूं? बिल्कुल नहीं! जाओ उन्हें खुद पकड़ो!"

"हां वो मैं कैसे कर सकता हूँ? मुझे यह भी नहीं पता कि मछली कैसे पकड़ी जाती हैं. तुम कम-से-कम मुझे मछली कैसे पकड़नी हैं वो तो सिखा सकती हो!"

"ओह, उसमें कुछ भी मुश्किल नहीं है. तुम्हें बस एक बर्फ के छेद पर जाना होगा, और अपनी पूंछ उसमें डालनी होगी, और चुपचाप वहां बैठना होगा, और पूरे समय दोहराते रहना है 'चारा लाओ, मछली - बड़ी और छोटी!' और फिर मछलियां तुम्हारे पास आ जाएंगी!"

"सलाह के लिए धन्यवाद!"

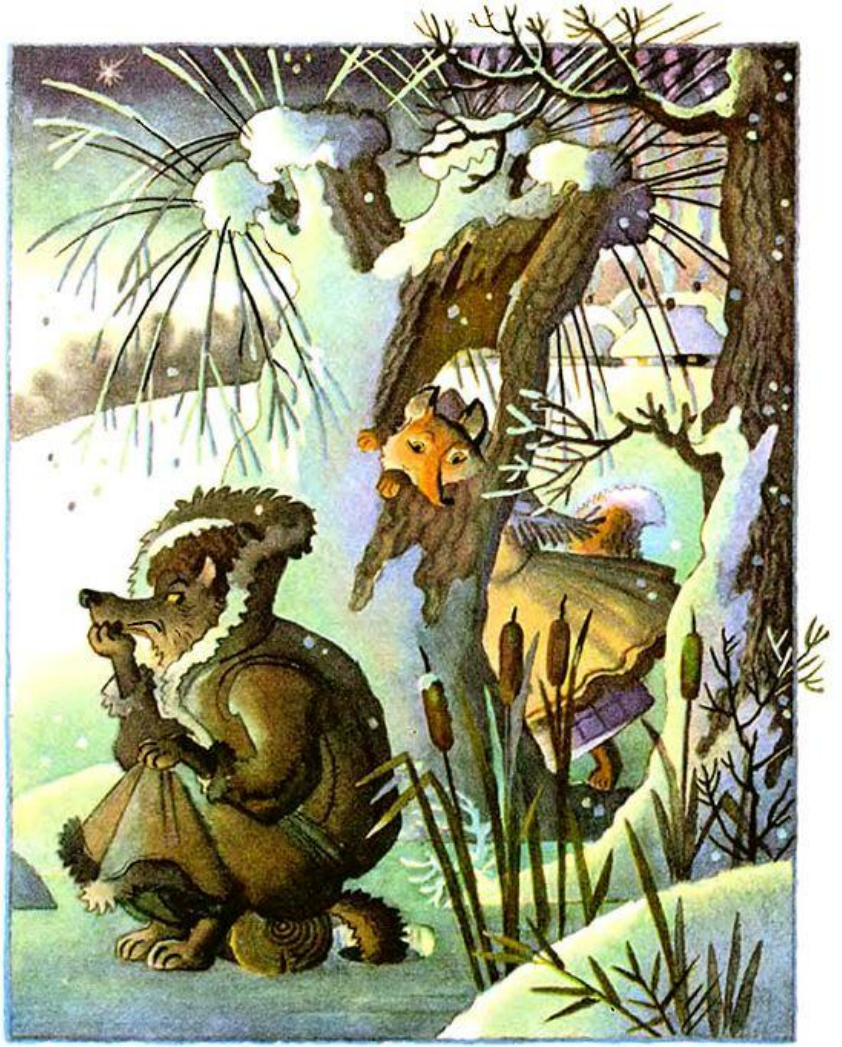

भेड़िया तेजी से नदी की ओर भागा, एक बर्फ के छेद के पास बैठ गया, अपनी पूंछ उसमें डाल दी और बार-बार कहा:

"चारा प्राप्त करें, मछली - केवल बड़ी और बड़ी! चारा प्राप्त करें, मछली - केवल बड़ी और बड़ी! चारा प्राप्त करें, मछली - केवल बड़ी और बड़ी!"

आप देखें, वह इतना लालची था कि वह केवल बड़ी मछलियां ही चाहता था. उस दिन मौसम बहुत कड़ाके की ठंड वाला था. और वो लोमड़ी की योजना के लिए आश्चर्यजनक रूप से अनुकूल था.

"फ्रीज, वुल्फ टेल, फ्रीज! फ्रीज, वुल्फ टेल, फ्रीज!" वह खुद को गर्म रखने के लिए नदी के किनारे ऊपर-नीचे दौड़ती रही.

"आप क्या कह रही हैं, फॉक्सी-लोक्सी?" भेड़िये ने पूछा.

"मैं बस इतना कह रही हूं 'चारा ले आओ, मछली - बड़ी और छोटी!"

"अब मुझे कोशिश करने दो: चारा, मछली - केवल बड़ी और बड़ी ही लाओ!"

भेड़िये ने अपनी पूँछ हिलाई और उसे लगा कि वह भारी हो गई थी.

"तुम बस थोड़ा और इंतज़ार करो." लोमड़ी ने कहा,"मछली ने अभी तुम्हारी पूँछ पर लटकना शुरू ही किया है."

फिर थोड़ी देर बाद उसने कहा:

"अब उन्हें बाहर खींचो, पाल्सी-वोल्फ़ी!"

भेड़िये ने जोर से खींचा, लेकिन उसकी पूँछ बर्फ के छेद में तेजी से जम गई थी और वह उसे बाहर नहीं निकाल सका.

"ओह, दुष्ट जानवर, तुमने क्या किया है!" लोमड़ी उस पर चिल्लाई. "आप हर समय कहते थे 'चारा ले आओ, मछली - केवल बड़ी और बड़ी' और अब बड़ी मछली आपकी पूंछ से चिपक गई है और अब आप उसे बाहर नहीं निकाल सकते हैं. देखो, मैं तुम्हारी मदद के लिए किसी को गांव से बुलाकर लाती हूं."

और फिर लोमड़ी गाँव की ओर भाग गई.

"गाँव में भेड़िया है, गाँव में भेड़िया है, सब लोग बाहर आएँ और उसकी पिटाई करें!" लोमड़ी गाँव की सड़क पर दौड़ते हुए चिल्लाई.

तुरन्त गाँव में हलचल मच गई. लोग अपने-अपने घरों से बाहर भागे, कुछ के पास कुल्हाड़ियाँ थीं, कुछ के पास कांटे और फाँसे थे, और महिलाओं के पास ओवन के कांटे और पोकर थे. वे नदी की ओर बढ़े और भेड़िये पर टूट पड़े और उसे इतना पीटा कि उसकी हड्डियाँ हिल गईं.

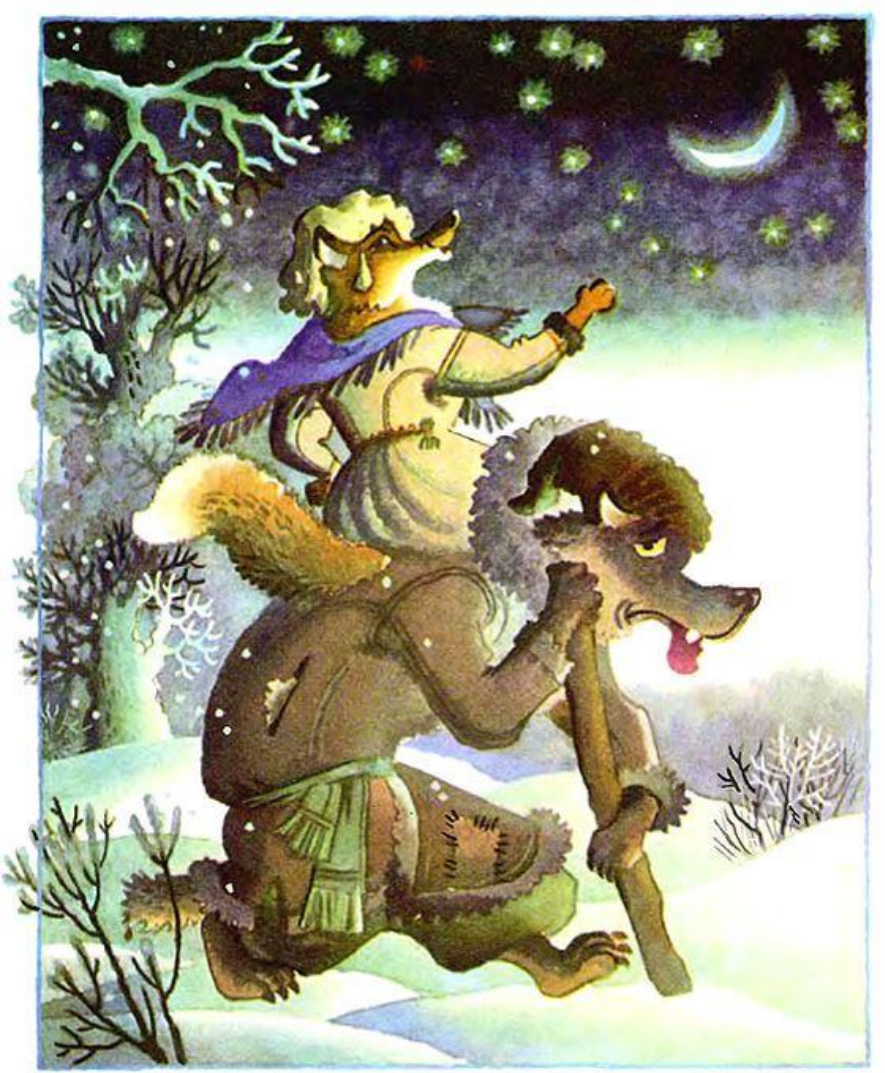

इसी बीच लोमड़ी एक घर में घुस गई. घर में कोई नहीं था - घर की मालकिन भेड़िये को कोड़े मारने के लिए नदी की ओर भागी थी और अपने पीछे बिना गूंथे आटे का एक बर्तन छोड़ गई थी. लोमड़ी ने आटे में से कुछ लिया, उसे अपने सिर पर पोता और बाहर खेत में भाग गई. तभी भेड़िया रेंगता हुआ वहां आया, जिंदा से ज्यादा मरा हुआ - लोगों ने उस बेचारे को पीट-पीटकर काला-नीला कर दिया था. उसे देखते ही लोमड़ी कराहने लगी और विलाप करने लगी, यह बहाना करते हुए कि वह बीमार है.

"आह, यह तुम हो, चालाक प्राणी," भेड़िये ने कहा. "देखो तुमने मेरे साथ क्या किया है. तुम्हारे कारण मैंने अपनी पूँछ खो दी है."

"ओह, पाल्सी-वोल्फ़ी, तुम इतनी गलत बात कैसे सोच सकते हो," उसने कहा. "क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मैंने तुमसे अधिक कष्ट सहा है? उन्होंने मेरी खोपड़ी तोड़ दी है और मेरे सिर से दिमाग बाहर निकल रहा है. पाल्सी-वोल्फ़ी, मुझे अपनी पीठ पर ले चलो, क्योंकि मैं मुश्किल से चल पा रही हूँ!"

"लेकिन मैं खुद अपने पैरों पर मुश्किल से खड़ा हो पा रहा हूँ!"

"तुमने अपनी पूँछ का केवल आधा हिस्सा खोया है, लेकिन मेरी खोपड़ी टूट गई है. ओह, मैं बेचारी, मैं अब अपने घर कैसे पहुँच पाऊँगी!"

"ठीक है, मेरी पीठ पर बैठ जाओ. मुझे लगता है कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है!"

लोमड़ी उसकी पीठ पर चढ़ गई, वो आराम से बैठ गई और कराहती और विलाप करती रही.

जबकि मूर्ख भेड़िया अपना बोझ यथासंभव उठाता रहा, लोमड़ी खुद से कहती रही:

"हारने वाला विजेता को ले जा रहा है! हारने वाला विजेता को ले जा रहा है!"

"आप यह क्या कह रही हैं, फॉक्सी-लोक्सी?"

"ओह, मैं सिर्फ यह कह रही हूं कि हारने वाला एक हारने वाले को ले जा रहा है!"

जिसके बाद वह फिर अपने आप से बुदबुदायी:

"हारने वाला विजेता को ले जा रहा है!"

आख़िरकार वे लोमड़ी की गुफा में पहुँचे.

"अब मेरी पीठ से उतरो, फॉक्सी-लोक्सी, लो तुम्हारा घर आ गया है!"

वह उसकी पीठ से नीचे कूदी, और सीधे उसके चेहरे पर चिल्लाई:

"हारने वाला विजेता को घर ले आया! हारने वाला विजेता को घर ले आया!"

उससे भेड़िया क्रोधित हो गया! वह लोमड़ी पर झपटने और उसके टुकड़े-टुकड़े करने ही वाला था, तभी लोमड़ी भागकर अपनी मांद में घुस गई. बहुत कोशिश करने पर भी भेड़िया अंदर नहीं जा सका. समय-समय पर लोमड़ी अपना थूथन मांद से बाहर निकालती और भेड़िये को चिढ़ाती थी:

"हारने वाला विजेता को घर ले आया!"

भेड़िये ने उसे बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन वह उसे बाहर नहीं निकल सका.

"ओह, मनहूस जानवर!" उसने गुस्से में कहा. "उसने मुझे कितना मूर्ख बनाया!"

फिर भी कुछ देर तक वह उसकी गुफा में घूमता रहा और फिर अपने रास्ते चला गया.

जहां तक लोमड़ी की बात है, वह आज भी सुख से रह रही है, और वो मुर्गी बड़ी खुशनसीब है जो उसकी निगाह से बच निकलती हो, क्योंकि लोमड़ी चालाक है, लोमड़ी धूर्त है, और वह पलक झपकते ही अपने शिकार को निगल जाती है.